

रानी लक्ष्मीबाई

हाल ही में भारत के प्रधानमंत्री ने [रानी लक्ष्मीबाई](#) के जन्मदिवस के उपलक्ष्य में झाँसी का दौरा किया।



रानी लक्ष्मीबाई:

- **परिचय:**
 - रानी लक्ष्मीबाई को झाँसी की रानी के नाम से भी जाना जाता है।
 - वह मराठा शासति झाँसी रियासत की रानी थीं।
 - वह **1857 के भारतीय विद्रोह** की प्रमुख व्यक्तित्वों में से एक थीं।
 - उन्हें भारत में ब्रिटिश शासन के प्रतिरोध के प्रतीक के रूप में देखा जाता है।
- **प्रारंभिक जीवन:**
 - उनका जन्म 19 नवंबर, 1828 को वाराणसी, उत्तर प्रदेश में हुआ था।
 - उनका वास्तविक नाम मणकिरणिका था।
 - पढ़ाई के दौरान ही उन्होंने मार्शल आर्ट का औपचारिक प्रशिक्षण भी लिया, जिसमें घुड़सवारी, नशानेबाजी और तलवारबाजी शामिल थी।
 - मनु के साथियों में नाना साहब (पेशवा के दत्तक पुत्र) और तात्या टोपे शामिल थे।
- **झाँसी की रानी के रूप में मनु:**
 - 14 साल की उम्र में मनु का विवाह झाँसी के महाराजा गंगाधर राव नेवालकर से हुआ, जिनकी पहली पत्नी का बच्चा होने से पूर्व ही नधिन हो गया था जो सहिासन का उत्तराधिकारी होता।
 - अतः मणकिरणिका झाँसी की रानी, लक्ष्मीबाई बन गई।
 - रानी लक्ष्मीबाई ने एक पुत्र को जन्म दिया जिसकी जन्म के तीन महीने बाद ही मृत्यु हो गई। बाद में दंपति ने गंगाधर राव के परिवार से एक बेटे दामोदर राव को गोद ले लिया।
- **स्वतंत्रता संग्राम में भूमिका:**
 - रानी लक्ष्मीबाई स्वतंत्रता के लिये भारत के संघर्ष के बहादुर योद्धाओं में से एक थीं।
 - वर्ष 1853 में जब झाँसी के महाराजा की मृत्यु हो गई, तो लॉर्ड डलहौजी ने गोद लिये गए बच्चे को उत्तराधिकारी के रूप स्वीकार करने से इनकार कर दिया और व्यपगत के सिद्धांत (Doctrine of Lapse) को लागू करते हुए राज्य पर कब्जा कर लिया।
 - रानी लक्ष्मीबाई ने अंगरेजों के खिलाफ बहादुरी से लड़ाई लड़ी ताकि झाँसी साम्राज्य को वलिय से बचाया जा सके।
 - 17 जून, 1858 को युद्ध के मैदान में लड़ते हुए उनकी मौत हो गई।
- जब भारतीय राष्ट्रीय सेना ने अपनी पहली महिला इकाई (1943 में) शुरु की, तो इसका नाम झाँसी की बहादुर रानी के नाम पर रखा गया था।

व्यपगत का सदिधांत (Doctrine of Lapse):

- यह वर्ष 1848 से 1856 तक भारत के गवर्नर-जनरल रहे लॉर्ड डलहौजी द्वारा व्यापक रूप से अपनाई गई एक वलिय नीतली थी ।
- इस नीतली के अनुसार कोई भी रलयासत जो ईस्ट इंडिया कंपनी के परतयकष या अपरतयकष नरितरण में थी और जहाँ शासक के पास कानूनी रूप से पुरुष उत्तराधकलरी नहीं था, उस पर कंपनी द्वारा कबज़ा कर ललया जाता था ।
 - इस परकार भारतीय शासक के कसी भी दततक पुत्र को राज्य का उत्तराधकलरी घोषतल नहीं कलया जाता था ।
- व्यपगत का सदिधांत लागू करते हुए डलहौजी द्वारा नमिनलखितल राज्यों पर कबज़ा कलया गया:
 - सतारा (1848 ई.),
 - जैतपुर और संबलपुर (1849 ई.),
 - बघाट (1850 ई.),
 - उदयपुर (1852 ई.),
 - झाँसी (1853 ई.)
 - नागपुर (1854 ई.)

सुरोत: पी.आई.बी.

PDF Refernece URL: <https://www.drishtiiias.com/hindi/printpdf/rani-lakshmibai-1>

